Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

जैसलमेर दुर्ग का वैभव एवं स्थापत्य कला - एक अध्ययन

योगेन्द्र कुमार[1], मोहन लाल राठौड़[2]

स्वतंत्र शोधार्थी, जैसलमेर, राजस्थान, 345001

राजस्थान की पश्चिमी सीमा पर स्थित जैसलमेर रियासत माड़धरा के नाम से प्रसिद्ध रही है। इसकी स्थापना भारतीय इतिहास के मध्यकाल में यदुवंशी भाटी महारावल जैसल ने 1155 ई. में की थी तथा स्वयं के नाम पर इस रियासत का नाम जैसलमेर रखा।जैसलमेर अपनी कला, संस्कृति, वास्तुकला, भव्य ऐतिहासिक स्थल तथा मरुस्थल के प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण पर्यटन नगरी के नाम से विख्यात है।

राजस्थान की मरुभूमि में दुर्ग निर्माण की परम्परा प्राबीनकाल से ही चली आ रही है। बाहा शत्रु आक्रमणों से बचाव, गोला बारुद, हथियारों को सुरक्षित रखने तथा रसद साम्रगी के संचय करने के लिए इसका उपयोग किया जाता था।' दुर्ग की नींव राजगुरु की सलाह पर तिथि, दिन एवं स्थान को देखकर वास्तुशास्त्र के अनुसार रखी जाती थी।

जैसलमेर दुर्ग की ढूढ़ता के विषय में राजस्थानी कवि ने कहा है-

"गढ़ दिल्ली, गढ़ आगरो, अधगढ़ बीकानेर
भलो चुणायों भाटियों, सिरे जो जैसलमेर " ।।

इतिहासकार नंदकिशोर शर्मा के अनुसार प्राचीन काल में मथुरा से द्वारिका जाने का रास्ता जैसलमेर से होकर निकलता था। एक बार श्रीकृष्ण भगवान व अर्जुन इसी रास्ते से द्वारिका जा रहे थे। जैसलमेर की इस त्रिकूट पहाड़ी पर कुछ देर विश्राम करने के लिए रुके। इस दौरान अर्जुन को प्यास लगी और आसपास कहीं पानी नहीं था। तब श्रीकृष्ण भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से यहां पर कुआं खोद दिया और अर्जुन की प्यास बुझाई।

इस त्रिकूट गढ़ पर महारावल जैसल ने संवत 1212(सन 1156)में सोनार दुर्ग की नींव रखी और विशाल दुर्ग बनाया।
अपनी सुरक्षित राजधानी एवं जल स्रोत

उद्देश्य की प्राप्ति हेतु महारावल प्रतिदिन अपने विश्वासपात्र साथियों के साथ 15-20 किलोमीटर की परिधि में पैदल यात्रा करते थे। एक दिन संयोग से ईसाल नाम के पुष्करणा ब्राहम्ण को उन्होनें तपस्या करते देखा।

जैसल ने उनको प्रणाम किया तो ब्राहम्ण ने कहा कि जिस स्थान की खोज तुम कर रहे हो, वह स्थान में तुम्हें दिखाता हूँ। ब्राहम्ण ईसाल, जैसल को गोरहरे नामक तीन कोने वाले त्रिकुट पहाड़ पर ले गया और उस पहाड़ पर बने जलकूप को दिखाते हुए कहा कि ये जलकूप भगवान कृष्ण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन की प्यास बुझाने के लिए सुदर्शन चक्र से खोजा था। तथा यह भविष्यवाणी की थी कि किसी काल में चन्द्रवंशी जैसल नाम का महारावल होगा जो यह विशाल दुर्ग बनाकर उस स्थान पर राजधानी स्थापित करेगा। मेहता अजीज अपने भाटीनामें में लिखते है कि यहा शिला थी जिस पर एक भविष्णवाणी इस प्रकार लिखी हुई थी-

" जैसल नाम को जदुपति, यदुवंश में एक थाय।
किणी काल के मध्य में इण था रहसी आय।।"

महारावल जैसल को यह स्थान बहुत पसन्द आया। उन्होनें ईसाल को धन्यवाद दिया और कहा की है गुरुवर दुर्ग के साथ-साथ आपकी तपस्या का यह स्थान ईसाल के नाम से प्रसिद्ध होगा। दुर्ग स्थापना के साक्ष्य में इतिहारा के अनुसार महारावल जेसल ने विक्रम संवत 1212 में श्रावण शुक्ल द्वावशी बुधवार के दिन इस दुर्ग की नींव रखी थी। जैसलमेर री ख्यात में भी कुछ इस प्रकार वर्णन हैं -

"बारे सो बारोतरो श्रावण मास सुदेरी।
जैसल थाणौ जोरवर महिपत जैसलमेर।।
लंका ज्यू अगजीत है घणा थाट रे घेर
रिघु रहीसी भाटिया मही पर जैसलमेर।।

इसी प्रकार लगभग सात वर्षों के निर्माण के बाद एक प्रोल तथा कुछ बुर्ज बनाकर 1219 संवत में इसे पूर्ण कर लिया गया था। इस दुर्ग का विकास जैसल पुत्र महारावल शालिवाहन ने किया था। राजस्थान की उत्तरी सीमा के सजग प्रहरी एवं उत्तर भड़ किवाड की उपाधि धारण करने वाला यह दुर्ग विश्व के मरुस्थलीय दुर्गों में सर्वश्रेष्ठ होने के साथ प्राचीनतम दुर्ग है।' भाटी राजपूतों की वीरता, शौर्य, त्याग और बलिदान का प्रतीक है।
जैसलमेर दुर्ग का वैभव मुगल स्थापत्य कला से भिन्न है, यहां मुगलकालीन किलो की तरह नहरे फव्वारे, तड़क भड़क, बाग बगीचे का पूर्ण रुप से अभाव रहा है, जबकि चित्तौड़ दुर्ग की तरह महल, मंदिर,प्रासाद व जनसाधारण हेतु मकान बने हुए हैं।
जैसलमेर दुर्ग के चारों ओर निर्जन मरुस्थल होने के कारण इसे धान्व दुर्ग भी कहते है।" यह दुर्ग स्थापत्यकला का बेजोड नमूना है। जिस समय रावल जंसल ने इसकी नींव रखी थी, तत्कालीन राजधानी की सुरक्षा की दृष्टि से धरातल के ऊंचे त्रिकोण पर्वत पर इरा दुर्ग का निर्माण उपयुक्त था। इरा दुर्ग के निर्माण में उच्च कोटि की स्थापत्यकला का विशेष स्थान दिया गया था।

वही दुर्ग एवं उसके भीतर निवास करने वाली प्रजा की सुरक्षा व्यवस्था का पूरा ध्यान रखा गया था। "पीत. पाषाणों से इस दुर्ग का निर्माण पत्थर पर पत्थर रखकर किया गया था। इसमें किसी प्रकार का कोई चूना काम में नहीं लिया गया था। यह दुर्ग रेत के समंदर में अंगडाई लेते हुए सिंह के समान प्रतीत होता है। प्रातः काल एवं सर्यास्त के समय सूर्य की किरणों से यह दुर्ग स्वर्ण के समान चमकता हुआ लगता है। इस कारण इस दुर्ग को सुनहरा दुर्ग भी कहते हैं।
है। त्रिकूट पहाड़ी पर निर्मित इस दुर्ग में 99 बुर्ज बने हुए है। इसके प्रवेश हेतु चार बड़े-बड़े द्वार बनाये हुए है। दुर्ग में प्रवेश हेतु एक ही मार्ग है। प्रवेश द्वार की स्थापत्य कला इतनी बेजोड़ है कि प्रथम द्वार में प्रवेश करने पर दूसरा व इसी प्रकार दूसरे के बाद तीसरा व चौथा दरवाजा दिखाई नहीं देता है। दुर्ग में बना रास्ता इरा प्रकार घुमावदार रखा गया था कि कोई शत्रु उस समय आसानी से दिशा भ्रमित में रास्ता भटक सकता था। बुजों के चारों और एक खाई भी बनायी गई थी ताकि शत्रु रास्ते द्वारा चढ़कर भी बुजों में प्रवेश ना कर सके।

राजाओं के रनवास भी उनके पीछे की पंक्ति में बनाए गए थे। इसके अतिरिक्त दुर्ग के बाहरी बुजों पर प्रथम सुरक्षा पंक्ति के रुप में राज्य के मुनासिब दीवान और अन्य व्यक्तियों को बसाया गया था और बीच में सेठ साहूकारों ब्राहामणों व अन्य जनता को सुरक्षित बसाया गया था।

राजमहल नगर के सामने स्थित थे, इस कारण शत्रुओं से कोई सीधा खतरा नहीं था। जबकि राज्य का खजाना, अन्न भण्डार, शस्त्र भण्डार व बारुव भण्डार बीच में सुरक्षित स्थानों पर कचहरियों के पास बनाये गये थे ताकि दुर्ग की पूर्ण रुप से रक्षा हो सकें। "मरुधरा की ओट में बना जैसलमेर दुर्ग भाटी राजाओं की वीरता, शोर्य अदभूत पराक्रम तथा वीरांगनाओं के जौहर की परम्पराओं का साक्षी रहा है।" इसी दुर्ग में ढाई साके होने के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते है। इनमें पहला साका अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुआ।

दुर्ग में लंबे घेरे के पश्चात् भाटी शासक रावल मूलराज कुंवर रतनसी और वीर योद्धाओं ने क्षत्रिय धर्म का पालन करते हुए वीरगति प्राप्त की और वीरांगनाओं ने जोहर का अनुष्ठान किया।

जैसलमेर का द्वितीय साका फीरोज तुगलक के शासनकाल में हुआ। त्रिलोकशी, रावल दूदा ,त्रिलोकसी एवं अन्य भाटी सरदार शत्रु सेना से लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की और दुर्ग की वीरांगनाओं ने जौहर किया। जैसलमेर का तृतीय साका अर्द्धसाका कहलाता है क्योंकि इसमें वीरों ने केसरिया तो किया, लेकिन जौहर नहीं हुआ। अतः इगे अर्द्धसाका ही माना जाता है।
जैसलमेर दुर्ग में निर्मित गलिया, हाट बाजार, जलकूप जैन मंदिर, जैन ग्रंथालय स्थापत्य कला के अनूठे उदाहरण है।

दुर्ग के चार विशाल द्वारों अखैपोल, गणेशपोल, बूटापोल तथा ट्यापोल पार करने के बाद जय चौहटे नामक खुले मैदान में पहुंचते है तो चारों तरफ विशाल राजभवन दिखाई देते हैं। इनकी नक्काशी व जाली डारो स्थापत्य कला उत्कृष्ट है।"इसी प्रकार दुर्ग के चारों और सर्पिलाकार वनी द्वितीय दीवार में तीर तरकश, तोप रखने के स्थान बने हुए है तथा विशाल बेलनाकार व गोलाकार पत्थर रखने के स्थान बने है। तत्कालीन युद्धकाल में पानी की निकासी की नालियों व बुजों के बीच बने मौखे अति सुन्दर डिजाइन के है। दुर्ग में एक बुर्ज महारावल वैरीसाल के नाम पर है। इसकी स्थापत्य कला इतनी उत्कृष्ट है। कि दूर से दुर्ग का द्वार दिखाई नहीं देता है।
साथ ही दुर्ग में भूलभूलैया सी घाटी व गलियों का निर्माण करवाया गया था जिससे इस बुर्ज से दुश्मन पर चारों तरफ से नजर रखी जा सकती थी। जैसलमेर दुर्ग में महारावल भीम ने निर्माण कार्य आरम्भ कर उनका विस्तार किया था तथा मनहरदास ने अपूर्ण कार्यों को पूर्ण कर कुछ बुर्जा का निर्माण कर दुर्ग को अंतिम रूप प्रदान किया। जैसलमेर दुर्ग 250 फीट ऊंचा, 1500 गज लम्बा व 750 गज चीड़ा है. दुर्ग को वजनदार पत्थरों की जुङाई पत्थरों में खाच चेकर की गई है, ताकि पत्थर खिसक ना जाए। इसी स्थापत्य कला की अनूठी निर्माण शैली के कारण सैकड़ों वर्षों पश्चात् भी दुर्ग वर्तमान में नया प्रतीत होता है।
जिसकी प्रशंसा कवि ने इन पंक्तियों में की है -

"स्वर्ण प्रस्तर से जड़ा यह दुर्ग जैसाण का
दे रहा परिचय सदा भाटियों की आण का"।

जैसलमेर सोनार दुर्ग में स्थित राजमहल, सतियों के पगोथिये, दुर्ग संग्रहालय, जैसलकूप, जैन ग्रंथालय, जैन मंदिर अपनी स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने है। इस प्रकार दुर्ग अपनी स्वर्णिम आभा, बेजोड़ स्थापत्यकला एवं कलात्मक वैभव से हमेशा पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

संर्दभ ग्रंथ सूची:-

1. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास- पंडित गौरीशंकर औझा
2. विश्व प्रसिद्ध पर्यटन नगरी जैसलमेर -रघुवीर सिंह भाटी
3. जैसलमेर का रियासत कालीन इतिहास -डाॅ.अशोक गाड़ी
4. गजनी से जैसलमेर -हरिसिंह भाटी
5. जैसलमेर राज्य का इतिहास -मांगीलाल मंयक
6. जैसलमेर पर्यटन स्मारिका -जिला प्रशासन जैसलमेर
7. अशोक गाड़ी का शोध श्री रिसर्च पत्रिकामें प्रकाशित शोध पत्र
8. जैसलमेर राज्य का मध्यकालीन इतिहास -डाॅ.हरिवललभ माहेश्वरी
9. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास -डाॅ.एस.एल नागौरी